Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

महर्षि दयानन्द की परम्परा में हिंदी पत्र- पत्रिकाओ का हिंदी भाषा में योगदान

Asha[1]* Dr. Govind Dwivedi[2]

[1]Research Scholar of OPJS University, Churu Rajasthan

[2]Associate Professor, OPJS University, Churu Rajasthan

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना:

महर्षि के अनुयायीयों ने महर्षि दयानन्द के विचारों से उर्जा प्राप्त कर थोड़े ही समय में हिन्दी भाषा के साहित्य और पत्रकरिता के कोष को अक्षत रूप से भर दिया। पत्रकारिता के विकास के साथ-साथ पत्रकारिता के नये सिद्धांतों का भी उद्भि हुआ। महर्षि दयानन्द की परम्परा में पोषित पत्रकारिता के सार्वभौमिक और नीतिगत सिद्धान्त थे- पत्रकारिता में सत्यता, निभीकता और प्रमाणिकता। महर्षि दयानन्द के सतचन में ये तीनों ही सिद्धान्त मौलिक रूप में विद्यमान थे जो अनुवांशिकता के सिद्धांतानुसार उनके अनुयायिओं में भी पहुँचे।

आर्य पत्रकारिता ने, पत्रकारिता के इन्हीं सिद्धान्त स्तम्भों का अवलंबन किया। आर्य पत्रकारों का यह सिद्धान्तपरक चिंतन और कर्म ही महर्षि दयानन्द की परम्परा में पोषित पत्र-पत्रिकाओं का हिन्दी पत्रकारिता को सबसे बड़ा योगदान है। उर्दू के प्रभाव वृत्त को भेद कर किस प्रकार आर्य पत्रकारिता ने हिन्दी भाषा को योगदान दिया इसका अनुमान इस उद्धरण से लगता है, डॉ. राम रत्न भटनागर लिखते हैं, “उर्दू के मध्य में हिन्दी पत्रकारिता को दृढ़ता के साथ स्थापित करने वाली शक्ति आर्यसमाज ही थी।”[१]

क्योंकि प्रत्येक आर्य-पत्र-पत्रिका और प्रत्येक आर्य पत्रकार के हिन्दी को किये गए योगदान का पृथक-पृथक अध्ययन इस शोध-प्रबंध के व्यावहारिक क्षेत्र में संभव नहीं है इस लिए इस अध्याय में आगे कुछ र्यनित पत्रकारों का संक्षिप्त परिचय देंगे जिन्होंने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से हिन्दी पत्रकारिता के विकास में विशेष योगदान दिया।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती (१८२४-१८८३) आधुनिक भारत के महान चिन्तक, समाज-सुधारक व देशभक्त थे। उनका बचपन का नाम 'मूलशंकर' था।

उन्होंने ने 1874 में एक महान आर्य सुधारक संगठन - आर्य समाज की स्थापना की। वे एक संन्यासी तथा एक महान चिंतक थे। उन्होंने वेदों की सत्ता को सदा सर्वोपरि माना। स्वामीजी ने कर्म सिद्धान्त, पुनर्जन्म, ब्रह्मचर्य तथा सन्यास को अपने दर्शन के चार स्तम्भ बनाया। उन्होने ही सबसे पहले १८७६ में 'स्वराज्य' का नारा दिया जिसे बाद में लोकमान्य तिलक ने आगे बढ़ाया।

स्वामी दयानन्द के विचारों से प्रभावित महापुरुषों की संख्या असंख्य है, इनमें प्रमुख नाम हैं-मादाम भिकाजी कामा, पण्डित लेखराम आर्य, स्वामी श्रद्धानन्द, पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी, श्यामजी कृष्ण वर्मा, विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, मदनलाल ढींगरा, राम प्रसाद 'बिस्मिल', महादेव गोविंद रानडे, महात्मा हंसराज, लाला लाजपत राय इत्यादि। स्वामी दयानन्द के प्रमुख अनुयायियों में लाला हंसराज ने १८८६ में लाहौर में 'दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज' की स्थापना की तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने १९०१ में हरिद्वार के निकट कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना की।

महर्षि दयानन्द के हृदय में आदर्शवाद की उच्च भावना, यथार्थवादी मार्ग अपनाने की सजि प्रवृत्ति, मातृभूमि की नियति को नई दिशा देने का अदम्य उत्साह, धार्मिक-सामाजिक-आर्थिक व राजनैतिक दृष्टि से युगानुकूल चिन्तन करने की तीव्र इच्छा तथा भारतीय जनता में गौरवमय अतीत के प्रति निष्ठा जगाने की भावना थी। उन्होंने किसी के विरोध तथा निन्दा करने

www.ignited.in

की परवाह किये बिना आर्यावर्त (भारत) के हिन्दू समाज का कायाकल्प करना अपना ध्येय बना लिया था।

पंडित केशवदेव् शास्त्री की पत्रकारिता:

आप मूलत: रावलसपडी (अब पाकिस्तान में) के रहने वाले थे। रावलसपडी से काशी संस्कृत पढ़ने आये। और वहीं स्थायी रूप से रह कर कार्य करने लगे। नियुवकों में महर्षि की शिक्षाओं की और प्रेरित करने के लिए उन्होंने 'भारतवीय कुमार परिषद' का गठन किया और साथ ही आर्य जाति में नया जोश फूंकने के लिए आपने सं. १९०९ई. में 'निजीवन' नामक एक मासिक पत्र की स्थापना कर उसका सम्पादन किया। जिसने अपने समय में खूब प्रसिद्धि पाई। इस पत्र का ध्येयवाक्य अपनी पत्रकारिता के सिद्धान्त को स्पष्ट करता है-

उद्यति भानु: पहश्चमे कदीग्वभागे प्रचलति यदि मेरु: शीततां याति हीह्न:।

विकसति यदि पट्टम पवीताग्रे शिलायां न भिति पुनरूक्तं भाषिते सिनानाम।।[२]

इस पत्र में उच्च कोर्ट की साहित्यिक सामग्री भी प्रकाशित हुआ करती थी। डॉ. विभानीलाल भारतीय के अनुसार इस पत्र में आर्यसमाज से बाहर के लेखकों की रचनाये भी छपा करती थीं, इसके प्रथम (अंक चैत्र १९६८वि.) में पं. रामनारायण मिश्र लिखित ऋषि टालस्टाय (जीवन चरित), 'ब्यूटीफुल स्नो' शीर्षक एक अंग्रेजी कविता का मास्टर जगन्नाथ बी.ऐ. कृत हिन्दी काव्यानुवाद सुंदर हिम छपी थी।३ निजीवन का प्रत्येक अंक वेदमन्त्र तथा उसकी हिन्दी व्याख्या से प्रारम्भ होता था। यह पत्र सदी कि प्रगति के लिए सदा तत्पर रहता था ...तृतीय विषय के तृतीय अंक में श्री निष्कामेश्वर मिश्र का लेख 'मातृभाषा के प्रचार के लाभ' आदि लेख प्रकाशित हुए ...इस पत्र में जहाँ आर्यसमाज आन्दोलन से सम्बंधित लेखों,समाचारों तथा टिप्पणियों को प्रमुख स्थान दिया जाता था वहीं नैतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीती से सम्बंधित विषयों पर भी भरपूर पठनीय सामग्री रहती थी । नियुग की गणना उस युग के सच्चे हिन्दी पत्रों में होती थी।[४]

विभानीलाल भारतीय जी के अनुसार इस पत्र के नाम पर ही गांधीजी ने अपने पत्र का नाम 'निजीवन' रखा था और केशवदेव जी को इस विषय में एक पत्र भी लिखा था। निजीवन का उद्देश्य वैदिक धर्म के अनुसार आर्यसमाज के सिद्धांतों को आगे बढ़ाना और स्पष्ट ही हिन्दी भाषा का प्रचार, प्रसार और परिष्कार करना था।

पं. भीमसेन विद्यालंकार की पत्रकारिता:

ब्रिटिश सरकार की ज्यादतियों के चलते अपनी सम्पादकीय टिप्पणियों के लिए आप जेल भी गए। पं. गणेश शंकर विधार्थी जी के केस में न्यायालय की अवमानना करने के लिए आपको जेल हुई थी। जैसा कि हम पहले लिख आये है आपने 'सत्यवादी', 'दैनिक वीर अर्जुन', 'वन्दे मातरम', 'अलंकार', पंजाब सभा के मुखपत्र 'आर्य', इंद्रजी के पत्र 'अर्जुन' नामक पत्रों का आपने सम्पादन किया। 'आजकल', 'देवदूत', 'चन्द्रिका' आर्यवीर और आर्य मुसाफिर पत्रिकाओं का भी आपने सम्पादन किया। पंजाब केसरी के आदि सम्पादक थे। 'निभारत टाइम्स' में पंजाब की चिट्टवी नामक स्तम्भ भी आपने लिखा। अर्जुन के ध्येय वाक्य की भावना की उन्होंने सदैव रक्षा की। आपने अनेक सदी पुस्तकें भी लिखीं। उनकी पत्रकारिता के बारे में शांता मल्होत्रा जी लिखती हैं, "'पंजाब केसरी' हिन्दी को साम्प्रदाहयकता रवित राष्ट्रीयता का सूचक बनाने वाला राष्ट्रीय राजनीतिक साप्ताविक पत्र था। इसने राजनीतिक रुचि वाली जनता को हिन्दी की ओर आकृष्ट किया स्वगीय भगिती चरण वर्मा, भगतसिंह, सुखदेव आदि इस पत्र से सम्बद्ध हो गए। बटुकेश्वर दत्त तथा भगतसिंह के असेम्बली में बम फेंकने की घटना का, सर्वत्र, रोमांचकारी समाचार लाहौर में सबसे पहले पंजाबकेसरी में ही छपा। पंजाब केसरी लाहौर में सफलतापूर्वक निकला और १९१९ ई. की लाहौर कांग्रेस के कदनों में दैनिक रूप में पंजाब के प्रथम हिन्दी दैनिक होने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस दैनिक संस्करण को अकेले ही दिनरात जागकर निकलने का श्रेय पंडित भीमसेन जी को है। उन्हें यह बात कतई मंजूर न थी कि कांग्रेस के मौके पर अंग्रेजी और उर्दू के दैनिक तो दिखाई दें पर हिन्दी का कोई दिखाई न दे। जब सारा पंजाब कांग्रेस देखने में व्यस्त था तब हिन्दी का यह साधक कांग्रेस देखने का मोह छोड़कर पंजाब केसरी का दैनिक संस्करण निकलने में लगा हुआ था। नया-नया वैवाहिक जीवन है इसका भी इस साधक ए तपस्वी ने ख्याल नहीं किया और अकेला ही रात-दिन पंजाब केसरी का दैनिक संस्करण निकालने में लीन रहा था ...इस प्रकार 'पंजाब केसरी' पंजाब का पहला हिन्दी दैनिक समाचार-पत्र बना।"[५]

पंडित भीमसेन विद्यालंकार जी ने आजीवन अपने प्रेस के कार्यों को इन आदशों के आधार पर ही चलाया। व्यापार में लाभ के लिए हिसाब-किताब में हेर-फेर की पद्धति को कभी नहीं अपनाया। इस विषय में उनकी डायरी में लिखी एक घटना उल्लेखनीय है। १०दिसंबर १९३५ई. को ही अपनी डायरी में लिखते हैं, "१० दिसंबर १९३३ को तोषो के विवाह के अवसर पर श्री हरगोविन्दपुर गया। विवाह से आकर प्रेस के हिसाब-किताब के तैयार करने में व्यग्र हुआ । इन्कम टैक्स ऑकसिर की

www.ignited.in

चिट्टवी आई थी। १६ कदस. १९३३ को दोपहर को भीमसेन वर्मा के साथ मिलकर हिसाब तैयार किया सायं काल जगत नारायण जी से बातचीत में पूछा कि मैनेजर तथा मालिक के मदों को कैसे पूरा किया जाये। उन्होंने कहा कि हम तो प्रूफ रीडर तथा मैनेजर आदि के नाम फजी रख लेते हैं और खर्च बांध लेते हैं परन्तु आप आर्यसमाजी हैं शायद ऐसा ना करें। यह बात मेरे कदल में खटकी। दोपहर वर्माजी ने जो हिसाब तैयार किया था तथा जिसकी नकल इनकम टैक्स ऑकसिर को भेजी थी ही आनुमानिक था और निश्चय किया कि मांग आने पर इस फजी तथा आनुमानित हिसाब को ठीक साबित करने के लिए नये रजिस्टर बना कर उनमे १२ महीनों में इसे फैलाया जाये जगतनारायण जी की बातचीत में इस घटना ने मेरे हृदय को धक्का दिया। सौभाग्य ही समझना रहस्य कि ऊपर के ढंग का तय किया हुआ हिसाब इनकम टैक्स ऑकसिर ने नए कागज पर लिख कर लाने को कहा। मुझे इस मानसिक पाप से बर्न का मौका मिल गया।”[६]

जेल यात्रा:

जिस केस में गणेश शंकर विधार्थी जी को जेल की सजा हुई थी उसी केस की रिपोर्ट करने के लिए पंडित भीमसेन विद्यालंकार जी पर उत्तरप्रदेश सरकार की ओर से मुकदमा चलाया गया और उन्हें जेल भेजा गया, “अर्जुन का सम्पादक जेल भेजा गया । यह उ.प्र. की सरकार की ओर से अर्जुन पर अप्रत्यक्ष वार था। अर्जुन ने अपनी ‘न दैन्यं न पलायनम’ की नीति के अनुसार इस प्रहार से अपने को बचाया नहीं। माफीनामा पेश करने से यह संभव था किन्तु यह कार्य उसने स्वीकार नहीं किया। दूसरी ओर अदालत का भी बहिष्कार नहीं किया गया। मुकदमा डटकर लड़ा गया और दोनों पत्रों के सम्पादक जेल भेजे गए।”[७]

स्वामी दर्शनानंद की पत्रकारिता:

स्वामी दर्शनानन्द (सन्यासपूर्व पं. कृपाराम शर्मा) महर्षि के समर्पित अनुयायी थे। आप हिन्दी और संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। आपने हिन्दी पत्रकारिता के माध्यम से हिन्दी भाषा और हिन्दी पत्रकारिता की महान सेवा की। आपने अनेक गुरुकुलों की स्थापना करवाई जहाँ हिन्दी को शिक्षण का माध्यम बनाया गया। बनारस में रह कर आपने संस्कृत की शिक्षा ग्रहण की और वहीं पर लेखन कार्य प्रारम्भ किया । आपने वैदिक सिद्धान्तों को आम जन को समझाने के लिए लगभग तीन सौ लघु पुस्तिकाएं (tracts) लिखे। आपके लिखे हुए रैक्ट अपनी दार्शनिक शैली के लिए जाने जाते हैं। आप हिन्दी के एक अनथक लेखक थे। आपने अपने लेखों के माध्यम से आजीवन वैदिक सिद्धांतों का प्रचार और हिन्दी का प्रसार किया। आपकी तचकशक्ति बहुत प्रबल थी। आपने वैदिक सिद्धांतों और समाज सुधार के लिए जनता को जागरूक करने के लिए लगभग एक दर्जन पत्रों की स्थापना और संपादन किया, जिनमे से कुछ हैं:

तिमिरनाशक:

१८८२ई. इस पत्र को आपने तिमिर नाशक प्रेस काशी से सं १८९० ई. में प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। ब्राह्मण वितकारी: यह पत्र भी स्वामी दर्शनानन्द ने काशी से ही प्रकाशित किया। इसका प्रकाशन सं १८९२ई. में हुआ। ऋषि दयानन्द: ऋषि दयानन्द नाम का यह पत्र भी स्वामी दर्शनानंद द्वारा प्रकाशित और सम्पादित था। यह पहले साप्ताविक और फिर मासिक के रूप में प्रकाशित हुआ। भारत उद्धार: स्वामी दर्शनानन्द ने इस पत्र को जगरावां से १८९३ई. के आसपास प्रकाशित किया। वेद प्रचारक: यह पत्र भी स्वामी दर्शनानन्द ने लुधियाना के पास जगरावां से १८९४ई. में निकाला। वैदिक धर्म: १८८७ई. मुरादाबाद से प्रकाशित स्वामी दर्शनानंद द्वारा सम्पादित उर्दू पत्र को बाद में हिन्दी में भी निकाला गया। आर्य

सिद्धान्त (काशी):

स्वामी दर्शानंद ने ही बदायूं गुरुकुल की भी स्थापना की थी। उसी गुरुकुल का यह पत्र था। यह एक मासिक के रूप में १९०३ई. में प्रारम्भ हुआ, “इस पत्र के अगस्त १९०३ के अंक में देवरिया (उत्तर प्रदेश) में स्वामी दर्शानंद तथा पचास मौलवियों के बीच उस प्रसिद्ध शास्त्रार्थ को प्रकाशित किया जो ‘ईश्वरीय ज्ञान वेद या कुरान’ विषय पर हुआ था। पत्र का मुद्रण वैदिक यन्त्रालय अजमेर में होता था।”[८]

महाशय हर्रजीलाल ‘प्रेम’ और उनकी पत्रकारता: आप अपने समय के जाने-माने उर्दू पत्रकारों में से एक थे। आर्यसमाज के प्रसिद्ध समाचार पत्र आर्यमुसाफिर के सम्पादक रहे। हर्रजीलाल प्रेम अपनी सम्पादकीय स्पष्टोक्ति के लिए जाने जाते थे आप आर्यसमाज के श्रेष्ठ लेखकों, साहसी पत्रकारों और शास्त्रार्थ महारथियों में से एक थे। महाशय जी हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी व अरबी के विद्वान थे। उन्होंने मुसलमानों के सब ग्रंथों के मौलवियों तथा ईसाइयों से भी शास्त्रार्थ किये थे। आपने सदी, उर्दू और अंग्रेजी में कई पुस्तकें लिखीं। आप अपने समय के जाने माने पत्रकारों में से एक थे, “महाशय जी कुछ समय तक लाला लाजपतराय के दैनिक ‘वन्दे मातरम’ व महाशय कृष्ण जी के दैनिक ‘प्रताप’ के सहायक सम्पादक रहे। फिर आर्य प्रतिनिधि

सभा पंजाब ने पंडित लेखराम जी की पावन स्मृति में जब 'आर्य मुसाफिर' मासिक उर्दू को पुन:जन्म दिया तो ससम्मानित से आपको इसका सम्पादक नियुक्त किया गया। उस समय आर्यसमाज में बीसयों लेखक, कवि, विद्वान व शास्त्रार्थ महारथी थे। तब आपको यह गौरव प्राप्त हुआ कि अपने समय के सर्वश्रेष्ठ आर्य पत्र के आप सम्पादक चुनें गए।"९

महर्षि दयानन्द की परम्परा के पत्र किस तरह की सपाट और साफ भाषा में अपनी बात कहते थे कि आर्य मुसाफिर की सम्पादकीय टिप्पणीयों से स्पष्ट होता है: एक सनातनधर्मी पत्र की टिप्पणी का उत्तर देते हुए आर्यमुसाफिर के तत्कालीन सम्पादक महाशय चरनजीलाल 'प्रेमी' अपने सम्पादकीय में लिखते हैं, "श्री पंडित लोकनाथ जी आयोपदेशक ने गुरुकुल कांगडी के उत्सि पर सर्वथा उहर्त ही कहा था यदि भारतवर्ष को सच्चा स्वराज्य मिल सकता है तो केवल आर्यसमाज के द्वारा ही मिल सकता है इस पर सनातन धर्मी पत्र 'जरित' आग में जल-भुन रहा है। और लिखता है कि 'पंडित जी अपने आप को और अपने साहथयों को प्रसन्न करने के लिए चाहे कुछ भी कहें परन्तु घटनाएँ उनके वक्तव्य का प्रतिवाद रहीं हैं। ...ठीक है यदि भारत को स्वराज्य कदला सकेगा तो जागृत सनातन धर्म ही कदला सकेगा क्योंकि यही धर्म तो है जो भारतीयों को उन्नति के गुर बताता रहता है कि बाल-विवाह करो, दलितों को मंकदरों में प्रविष्टि ना होने दो, बिछुडों को गले ना लगाओ, पत्थरों, वृक्षों, जल, व अग्नि की पूजा करो, ब्राह्मणों को पूजो, भले ही वे बूट ही क्यों ना पाहलश करते हों और मंगल व शनिर्र ग्रहों के फेर में पड़े हुए भारत की नौका को ठीक मझधार में डुबो कर ईश्वर के गुण गाओ और फिर उच्च स्वर से कहो– बोलो सनातन धर्म की जय'।"[१०] आर्य मुसाफिर २६.२.१९३८ में छपी महाशय हर्रजीलाल की बेबाक रटप्पणी की एक बानगी और देखने योग्य है, "स्थानीय मुसलमान पत्र 'इहसान' लिखता है 'सहदुस्तान के मुसलमान यह सोर्ने पर विवश हो गए हैं की क्यों न इन लालाओं व धोतिपोशों को बताषनिया सवित पराहजत करके सहदुस्तान में पुन: इस्लामी राज्य स्थापित करने का प्रयास किया जाये'। आश्चर्य है कि मुस्लिम पत्र इस प्रकार के उत्तेजना पैदा करने वाले व झगड़े व विवाद खड़े करने वाले लेख प्रकाशित करते रहते है और उन्हें कोई पूछता नहीं। 'इहसान' से हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि क्या उसे भूल गया कि यह लाला व धोती वाले वही हैं जिन्होंने हशिाजी व गुरुगोसिद सिंह सरीखे वीर उत्पन्न करके अपने व अपने देश की रक्षा की थी। आर्य जाति अब भी आवश्यकता पड़ने पर ऐसे सेवक तथा रक्षक उत्पन्न कर सकती है।"११

गणेश शंकर विधार्थी की पत्रकारिता: प्रताप:

गणेशशंकर 'विधार्थी' महर्षि दयानन्द के एक समर्पित सिपाही थे जिन्होंने पत्रकारिता के सच्चे अर्थों को जिया। हिन्दू मुस्लिम एकता को उनका पूरा जीवन समर्पित रहा और कानपुर दंगों में, दंगों के बीच दोनों समुदायों के बीच शांति का प्रयास करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी। उन्हीं के द्वारा सम्पादित यह आर्य पत्र प्रताप अपने समय का सबसे यशस्वी पत्र था जिसमे हिन्दी के उस समय के सभी बड़े लेखक लिखा करते थे। प्रताप का हिन्दी पत्रकारिता और हिन्दी भाषा के साहित्य को अनमोल योगदान रहा। गणेश शंकर विधार्थी एक स्वतंत्रता सेनानी और सफल सम्पादक थे। आप एक निभीक पत्रकार थे स्कूल जीवन से ही आपकी रचनाएं 'स्वराज्य' नामक उर्दू अखबार में छपने लगीं थीं। विधार्थी जी की मूल प्रिहत्त देश सेवा और स्वाभिमान से अनुप्राणित थीं। महर्षि के आप अनन्य अनुयायी थे। आपके पत्र 'प्रताप' के द्वारा हिन्दी और भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन की महान सेवा हुई। पत्रकारिता के साथ- साथ उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों में कोई कमी नहीं आती थी। पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीयता के भावों को सदैव बल दिया। प्रताप कानपुर का कार्यालय क्रांतिकारियों की शरणस्थली बन गया था। उनकी पत्रकारिता के विषय में हम कतिपय प्रसिद्ध साहित्यकारों की सम्मित उर्दधृत करते हैं। विधार्थी जी के विषय में श्री वृन्दावन लाल वर्मा उन्हें स्मरण करते हुए लिखते हैं, "प्रताप को निकले हुए अभी कुछ ही दिन हुए थे। उतने ही थोड़े समय में ही (प्रताप) हम लोगों के आदर की वस्तु हो गया था। उनका विषय प्रताप' ही था। उसकी उन्नति देश के जनसत्तावाद से जुड़ी थी। ही उसके लिए पागल से थे और अंत तक रहे ...(एक) राजनीतिक कॉन्फ्रेंस में अंग्रेजी में खूब बहस छनी। उनको ही अच्छी न लगी। 'अंग्रेजी में कही हुई राष्ट्रीय बातों और भावनाओं को क्या स्थायित्व मिलना है?'

यह उदगार गणेशजी के मुंह से निकला । ही सदी के दीवाने थे । सदी द्वारा दिया हुआ संदेश ही वास्तविक समझते थे। और थोड़े से जमाने ने ही इसे साबित कर दिया।"[१४] आचार्य महावीर प्रसाद द्रुवेदी के साथ उनका गुरु और शिष्य का रिश्ता था द्रुवेदी जी लिखते हैं, "उनके उग्र लेख देख कर मैं कभी-कभी काँप उठता था उन्हें सौम्य बनने की शिक्षा देता था। उत्तर में वे मुझ से ही सुनी हुई ये सतरें सुना देते थे- अद्यैव वा मरण मस्तु युगान्तरे वा। न्यार्ययात्पथ: प्रविचलहन्त पदम न धीरा।।१५ गणेशजी के क्रांति के विषय में गाँधी जी लिखते हैं, "जिन कदनों हिन्दू मुस्लिम एकता का इतिहास लिखा जायेगा उन कदनों गणेश जी के इस उिवल उिसर पर देश भक्तों को ईर्ष्या होगी और उनकी

www.ignited.in

कृतियाँ ध्रुव की तरह अटल रह कर बलि के पथिकों को दिशा निदेश करेंगी।"१६

उपसंहार:

इस शोध के सभी अध्यायों के अध्यन से यह निष्कर्ष निकलता है की महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनकी प्रेरणा से उनके अनुयायियों ने हिन्दीभाषा के स्वरुप को स्थिर करने में, हिन्दी को हर तरह की साहित्य रचना के योग्य बनाने में और देश ही में नहीं अपितु विदेशों तक में उसका प्रसार करने में, एक शिष्ट भूमिका निभाई। जितने विविध विषयों पर परिष्कृत हिन्दी भाषा में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा ही तब तक समान्य बात नहीं थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी साहित्य को ओज और सरलता दोनों दी जिस से उनका साहित्य और साहित्य के माध्यम से हिन्दी भाषा बुद्दिजीवियों व सरल सामान्य व्यक्तियों दोनों में समान रूप से लोकप्रिय हुई। सत्यार्थप्रकाश इसका ज्वलंत उदाहरण है। भारत के तत्कालीन अचेतन प्राय: समाज में निचेतना के प्राण फूंकने का जो कार्य सत्यार्थप्रकाश ने किया वैसा दूसरा उदाहरण तत्कालीन हिन्दी साहित्य में नहीं मिलता। हिन्दी की वर्तनी को स्थिर करने में महर्षि दयानन्द ने बड़ा योगदान दिया, हिन्दी के शब्दकोश को संस्कृत के तत्सम शब्दों से समृद्ध किया। हिन्दी में दार्शनिक और गंभीर साहित्यक विषयों पर लिखने की सामथ्य पैदा की। आज उस संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को ही प्राय: शुद्ध हिन्दी माना जाता है और हिन्दीभाषा का विकास आज महर्षि दयानन्द सरस्वती की उसी संस्कृतनिष्ठ भाषा पर हो रहा है। इस शोध यह भी निष्कर्ष निकल कर सामने आया कि यद्मपि संस्कृत सहस्नाशब्दों तक आयषित की लोकभाषा रही लेकिन वैकदकोत्तर काल मे जैनमत और बौद्धमत के प्रभाव के कारण संस्कृत लोकभाषा न रह पायी। वैदिक संस्कृत से लोक संस्कृत और लोक संस्कृत से प्राकृत और अपभ्रंश जो हिन्दी और अंतत: खड़ीबोली हिन्दी के उस रूप को प्राप्त हुई जिसे आज सभी हिन्दी के नाम से जानते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

भाषा का इतिहास, पं.भगिद्दत्त रिसर्ष स्कोलर, विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद,दिल्ली,२०१२ पृष्ठ २५९

ऋहष दयानन्द की हिन्दी भाषा और साहित्य को देन, मंजुलता विधार्थी, मुहनिर गुरुदत्त संस्थान, सहडोन हसटी, १९९९, पृष्ठ ७२

हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, कोशल पहब्लसशग हाउस, फैजाबाद,२०११ पृष्ठ ३३७

महर्षि दयानन्द, इंद्र विद्मा वास्चति, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, २०१३ पृष्ठ ३८-३९

आयोद्देश्यरत्नमाला,स्वामी दयानन्द सरस्वती, दयानन्द ग्रंथमाला, हनिाषण शताब्दी संस्करण, परोपकारिणी सभा, अजमेर, पृष्ठ ७८३, ७८६-८७, ७९०

हिन्दी साहित्य का इतिहास,२०११, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,पृष्ठ ३९८, कोशल पहब्लसशग हाउस, फैजाबाद

हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, कोशल पहब्लसशग हाउस, फैजाबाद २०११, पृष्ठ ४००

भाषा का इतिहास, पं.भगिद्दत्त रिसर्ष स्कोलर,२०१२, विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद,दिल्ली, पृष्ठ २५९

ऋहष दयानन्द की हिन्दी भाषा और साहित्य को देन, मंजुलता विधार्थी, मुहनिर गुरुदत्त संस्थान, सहडोन हसटी, १९९९, पृष्ठ ७२

हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, २०११, कोशल पहब्लसशग हाउस, फैजाबाद, पृष्ठ ३३७

डा. मंजुलता विद्मथी,ऋहष दयानन्द की हिन्दी भाषा और साहित्य को देन, १९९९, मुहनिर गुरुदत्त संस्थान, सहडोन हसटी राजस्थान, पृष्ठ ८०

ऋहष दयानन्द की सदी भाषा और साहित्य को देन, मंजुला विधार्थी, मुहनिर गुरुदत्त संस्थान, सहडोन हसटी, १९९९, पृष्ठ १३४

ऋग्वेदाकदभाष्यभूमिका, दयानन्द सरस्वती, आर्ष साहित्य प्रचार रस्ट,२००७, पृष्ठ २५२-२५३

स्वामी दयानन्द भारतीय साहित्य के निमाषता, विष्णुप्रभाकर, १९८९, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, पृष्ठ ७८

गोकरुणानिधि, दयानन्द सरस्वती, विजय कुमार गोविन्दराम हासानंद, दिल्ली, २००५, पृष्ठ ९

सोजे वतन,(निाबराय) प्रेमरं्द, अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, गाहज़याबाद,२००९, पेज ३०

हिन्दी साहित्य का इतिहास,२०११, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,पृष्ठ ३९८, कोशल पहब्लसशग हाउस, फैजाबाद

Corresponding Author

Asha*

Research Scholar of OPJS University, Churu Rajasthan